तारीख: ०३/०३/२०२४

प्रति,

आध्यात्मिक सार्वभौम जैनाचार्य,

पू. युगभूषणसूरीश्वर जी मारा साहेब।

गितार्थ गंगा संस्था

अहमदाबाद

परमश्रद्धेय आदरणीय आचार्य युगभूषण सुरीश्वरजी के मार्गदर्शन और आधिपत्य से वर्तमान ज्योत फाऊंडेशन, गीतार्थ गंगा और अन्य उपक्रमोका व्यापक हेतू एक ही है।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

विचार, उच्चार, आचारमे उदारता, महानता, समता, सहिष्णुता और बंधुभाव से पूरे विश्वको; एक कुटुंब के रुपमें बनाये रखना, यही हमारी संस्कृती है।

संस्कृती की उपासना, सम्मान के साथ अनुकरण और वृद्धी एवं प्रसार के लिए; सांस्कृतिक तत्वों और मूल्योंका आकलन और अनुशीलन अवश्यंभावी है। तभी ही अज्ञानवश होने वाले; अनुचित आचरण को बदलकर; ज्ञान के प्रकाशमय मार्गपर; गतीशील पुरस्सरण हो सकता है।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

अज्ञानरुप अंध:कारको ज्ञानरुप ज्योति, प्रकाश से नष्ट करके मार्गक्रमण करे। यही कार्य; परमपूज्य आचार्य के प्रेरणासे ज्योत फाऊंडेशन कर रहा है।

सामान्य जनों के लिए, ज्ञानप्राप्ति के साधन है– ग्रंथ और गुरु. ग्रंथ का उद्देश है–

स्वधर्म ज्ञानवैराग्य साध्य भक्त्यैका ऽ गोचर:।

ऐसा ग्रंथज्ञान प्राप्त किया हुआ और उसके स्वाभाविक आचरणमें रत हुआ गुरु उत्तम उदाहरण है; जिसको सामान्य व्यक्ती अपना आदर्श मानकर आत्म उन्नति के मार्ग पर मार्गस्थ हो सकता है।

अध्यत्मिक ज्ञान से सामाजिक उत्थान की योजनामें योजक की भूमिकामें पंडित महाराज साहेब जी

अभ्युत्थानं अधर्मस्य धर्मसंस्थापनार्थाय.....

अविरत मार्गदर्शन और कार्यप्रेरित कर रहे है।

आदरणीय जैनाचार्य युगभूषणसुरीजी अर्थात पंडित महाराज साहेब के द्रष्टे दृष्टीकोणसे आर्य कोष के रुपमें अक्षय ज्ञानामृत कलश का निर्माण; अनेक वर्षो से अनेको विद्वान और ज्ञानी साधकोंके सम्मीलित प्रयास से और गीतार्थ गंगा के माध्यम से चला आ रहा है।

इस ज्ञानयज्ञ का मूर्त स्वरुप आर्य युग कोश अभी हमारे लिए उपलब्ध होने जा रहा है। हम इतने भाग्यशाली है कि कर्ता और कार्य दोनोके दर्शन एवं मार्गदर्शन का सौभाग्य हमें प्राप्त है।

गीतार्थ गंगा यह एक संग्रहालय है, जिसमें प्राचीन धार्मिक ज्ञान जो विविध भाषाओंमें लिखित स्वरुप से, विविध विचार धाराओमें मौखिक रुपमें, गुरु शिष्य परपरामें या संभाषा रुपमें उपलब्ध है, ऐसे १,५०,००० से ज्यादा ग्रंथोंका सम्मेलन है।

इसके साथ, पुरातन ज्ञानको; अर्वाचीन परिप्रेक्ष्यमें और मूलधारा अबाधित रखते हुए; वैज्ञानिक दृष्टिकोणसे विभिन्न संशोधन आवृत्तीयोंमें संगठित किया है।

ऐसे अनेको ग्रंथ, हस्तलिखित के वाचन, अध्ययन, आकलन, मनन, ऊहन और आचार्यो से अधिकरण प्राप्त करके ज्ञानमंथन करके, परिपूर्ण परिपाकरुप आर्य कोष बना है। यह माहिती संदर्भ जुटाना, संकलनपश्चात् उचित विवरण, विभाजन, संस्करण, प्रतिसंस्करण, पुनःपुनःसंस्करण करके; उसकों अंतिम स्वरुप देना, यह बहुतही जटिल कार्य रहा होगा। इसके लिए अनेको ज्ञानी अभ्यासक जैन साधू और साध्वीयोने अथक, निरंतर योगदान दिया है। यह तभी संभव है जब उस ज्ञान का महत्व, उसके प्रति स्नेह आदर श्रद्धा रखके, समाजकल्याण हेतू प्रेरणापूर्वक मार्गक्रमण होगा; यही इस महान कार्यका बलस्थान है।

आर्य कोष के मुद्रित स्वरुप की पूर्वावृत्ती देखने का सौभाग्य मुझे मिला। इसके लिए मैं जैन धर्म और सभी आचार्योंको आदरपूर्वक धन्यवाद देती हूँ, अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

जिस स्पष्टता और सुंदर रचना के साथ व्युत्पत्ती, निरुक्ती, उक्ती, अर्थ, ग्रह्यार्थ, मतितार्थ, पर्यायवाची, विकल्पवाची, स्वरुप, परिचय, कोष्टक, स्पष्टीकरण को उद्धृत किया है, वह अत्यंत सुगम, ज्ञानवर्धक और विलोभनीय है।

इस कार्य की मुद्रित आवृत्ती मे सम्मीलित ज्ञान से; हम सबको अवगत कराने के लिए आचार्यजी का मै आभार प्रकट करती हूँ। ज्ञान के द्वार, ज्ञानी लोगोंके लिए खोलके, उनको आत्मोन्नती तथा परोपकारके मार्गपर पुरस्सरित होने हेतू, इस कोषका महत्त्वपूर्ण योगदान है। इस जगह अप्रस्तुत किंतु एक बिनती करना चाहूँगी की इस ज्ञानभंडार के, सामान्य जनों के तथा अबोध वय के बालकोंके आकलन हेतू, यदि सारांश रुपमे, अधिकतम सरल भाषामें; प्रसिध्द किया जाय, तो 'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' उद्देश सफल होगा तथा उचित आयुमेंही धर्मज्ञान और संस्कार का बीजारोपण होगा।

शास्त्रं ज्योति प्रकाशार्थं विशेषात् बुध्दिरात्मनः।

सामाजिक, नौतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा आत्मिक उन्नती के लिए यह कार्य अत्यंत प्रेरणादायी है।

परमपूज्य आचार्य और सभी ज्ञानीजन, अनुयायी गण तथा इस कार्य में जुडे सभी परिजन और तकनीकी सहाय्यकों के पूरे समुदाय को मेरा शत शत नमन।

अनयाशिष.

वैद्य अनया पाथरीकर

मुम्बई

९८७०२१४५९५